विचार बिन्दु

कोई भी भाषा अपने साथ एक संस्कार, एक सोच, एक पहचान और प्रवृत्ति को लेकर चलती है। – भरत प्रसाद

धर्म की ध्वजा उठाने वालों की ज़ुबान क्यों फिसलती है!

वोक्कालिगा महासमस्तन मठ के महंत कुमार चंद्रशेखरनाथ स्वामी ने पिछले दिनों मुस्लिम समुदाय को वोट देने के अधिकार से वंचित करने के अपने बयान पर खेद व्यक्त करते हुए इसे 'ज़ुबान फिसलने' वाला बयान बताया है। उन्होंने कहा कि मुसलमान भी इस देश के नागरिक हैं और उन्हें भी दूसरों की तरह वोट देने का अधिकार है। इस संत ने एक बयान में कहा:– "मेरे बयान के बारे में मेरी स्पष्ट राय है कि मुसलमान भी इस देश के नागरिक हैं और उन्हें भी दूसरों की तरह वोट देने का अधिकार है। कल मेरे ज़ुबान फिसलने वाले बयान से अगर मुस्लिम भाई परेशान हैं तो मैं तहे दिल से खेद व्यक्त करता हूं। मैं अनुरोध करता हूं कि इस मुद्दे को आगे न बढ़ाएं और इसे यहीं खत्म करें।" क्या किसी के अपने बयान से इस प्रकार मुकर जाने से बात खत्म हो जाती है? यहां ज़ुबान फिसलने की बात कहने वाला ऐसा व्यक्ति है जो एक समुदाय का महंत है, जिस पर अवश्य ही अनेकों की आस्था होगी। यह आस्था धर्म का दंड धारण किये व्यक्ति पर इसलिए होती है क्योंकि लोगों को भरोसा होता है कि वह उन नैतिक मूल्यों का संरक्षक होगा जिनकी पालना में सामान्य आदमी कमजोर पड़ सकता है। धर्म का संरक्षक सबमें एक ईश्वर को देखता है, जो इंसानों के बीच भेद नहीं करता, वह प्रेम और सत्य की स्थापना करने के लिए मामूली सांसारिक पचड़ों से ऊपर उच्च वैचारिक धरातल पर पहले खुद पहुंचता है फिर अपने अनुयाइयों को ले जाने का उद्यम करता है। उसकी ज़ुबान फिसलती नहीं। ज़ुबान छद्म व्यक्ति की फिसलती है। अयोध्या का मुद्दा सर्वोच्च न्यायालय से सुलट जाने के बाद यदि किसी को लगा था कि अब देश में सांप्रदायिक सद्भाव फिर से पटरी पर आने लगेगा वे गलत साबित हो रहे हैं। सांप्रदायिक वैमनस्य फैलाने वाले भले ही 140 करोड़ वाले देश की आबादी में मुट्ठों भर हों, मगर वे बाज नहीं आते। ऐसे में किसी की ज़ुबान फिसलती है, तो कोई अजमेर के दरगाह की नींवें खुदवाने अदालत में चला जाता है, और कोई अदालत यंत्रवत उस पर नोटिस भी जारी कर देती है जिसे समाचारपत्र संस्थान तथा पत्रकारिता शिक्षा के उच्च डिग्रीधारी मीडियाकर्मी ऐसे प्रस्तुत करते हैं जैसे अदालत ने वादी के पक्ष में फैसला दे दिया हो और वह जीत गया हो। उत्तर प्रदेश और राजस्थान के ऐसे मामलों के याचिकाकर्ता और हिंदू राष्ट्रीय सेना नाम की संस्था के स्वयंभू अध्यक्ष विष्णु गुप्ता ने दंभ भरते हुए बीबीसी से कहा कि हम ऐसी कोई भी जगह नहीं छोड़ेंगे जहां मस्जिद है। विष्णु गुप्ता के विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत के उस बयान से उलट हैं जिन्होंने 2 जून 2022 को लोगों से कहा था, हर मस्जिद में शिवलिंग ढूंढने की ज़रूरत नहीं है। मगर धर्म को आध्यात्म के ऊंचे शिखर से गिरा कर अंधेरी खाई में खींचने वाले भी तो कम नहीं हैं। अनेकों ने धर्म को ही कारोबार बना लिया है। भारतीय परंपरा में धर्म किसी समुदाय को संगठित करने के अर्थ में कभी नहीं रहा। धर्म का यहां जैसा अर्थ और स्थान है उसका उदाहरण और किसी सभ्यता में नहीं मिलता है। यहां हर रिश्ते, हर काम का अलग धर्म होता है। भारतीय परिपेक्ष्य में सबको समेट कर कहें तो वह बनता है मानव धर्म। मानव धर्म शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उसकी भौतिक अवधारणा होते हुए भी वह आध्यात्मिक है। परिवार एक है परंतु उसकी हरेक इकाई का धर्म अलग-अलग है। पिता का धर्म है, माता का धर्म है, संतान का धर्म है, भाई का धर्म है बहन का धर्म है। परिवार से बाहर जाएं तो पाते हैं राजा का धर्म, प्रजा का धर्म, पुरोहित का धर्म, ब्राह्मण का धर्म, वणिक का धर्म, सेवक का धर्म, स्वामी का धर्म, मित्र का धर्म, और यहां तक कि दुश्मन का भी धर्म। यहां के इतिहास का सबसे हिंसक युद्ध महाभारत माना जा सकता है। मगर वहां भी धर्मयुद्ध है। अर्थात युद्ध का भी धर्म। भारतीय परंपरा में धर्म को कर्तव्य (ड्यूटी) या नैतिक दायित्व जैसे शब्दों में भी सीमित नहीं किया जा सकता। यह धर्म किसी परा या अपरा शक्ति या किसी एक किताब से भी नियंत्रित नहीं होता। फिर भी उसने हजारों वर्षों तक इस भूभाग की सभ्यता को एक विरल सांस्कृतिक व्यवस्था दी है।

> **ज़ुबान छद्म व्यक्ति की फिसलती है। अयोध्या का मुद्दा सर्वोच्च न्यायालय से सुलट जाने के बाद यदि किसी को लगा था कि अब देश में सांप्रदायिक सद्भाव फिर से पटरी पर आने लगेगा वे गलत साबित हो रहे हैं। सांप्रदायिक वैमनस्य फैलाने वाले भले ही 140 करोड़ वाले देश की आबादी में मुट्ठों भर हों, मगर वे बाज नहीं आते।**

भारत में धर्म एक पूर्णतया अद्वितीय सभ्यतागत अवधारणा है, जो अब्राहमिक धर्मों द्वारा निर्धारित कठोर आचार संहिता से बहुत अलग है। इसके नैतिक लचीलेपन को पश्चिमी विद्वान और भारत में उनके वैचारिक ध्वजावाहक आमतौर पर नहीं समझ पाते है। यहां धर्म, जीवन का एक जटिल और महत्वपूर्ण आयोजन का सिद्धांत है। यह मानव आचरण को नियंत्रित नहीं सभ्य बनाये रखने वाली एक संहिता है, जिसे किसी एक शब्द में अभिव्यक्त भी नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इसमें कई तरह के गुण शामिल हैं जैसे धर्मपरायणता, कर्तव्य, अच्छाई, सद्गुण और धार्मिकता आदि। भारतीय सभ्यता में धर्म को कायम रखने के लिए कोई निर्धारित साधन या नियम भी नहीं हैं। लेकिन यह भी है कि यहां धर्म ने अर्थ, काम और मोक्ष के साथ-साथ जीवन के दृष्टिकोण के एक प्रमुख सिद्धांत के रूप में प्रमुखता हासिल की। धर्म के मूल में क्या है, इसका विस्तार से वर्णन धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र जैसे ग्रंथ करते हैं और इसके परिभाषित सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हैं। कहा जा सकता है कि यहां धर्म नैतिकता की धारणा का मूल है। सही आचरण क्या है? सही या गलत क्या है? सही या गलत का निर्णय करने के लिए कोई अचूक कसौटी क्या है? सही व्यवहार क्या है? इसे घोषित करने का अधिकार किसके पास है? क्या कोई अपरिवर्तनीय नियम हैं जो सार्वभौमिक रूप से लागू हों? क्या नैतिक आचरण, संदर्भ और परिस्थिति के साथ बदलता रहता है, या यह सभी स्थितियों के लिए निरपेक्ष है? अधिकांश सभ्यताओं ने यह माना है कि कुछ चीजें बिल्कुल सही हैं या बिल्कुल गलत हैं। दूसरी ओर, भारतीय दृष्टिकोण अत्यधिक सूक्ष्म और जटिल है, जो कुछ गुणों पर जोर देता है जिनका पालन किया जाना चाहिए, और साथ ही संदर्भ, और परिस्थिति के आधार पर उस आदर्श से छूट भी प्रदान करता है। कई पर्यवेक्षकों ने इस नपी-तुली अस्पष्टता में एक दुर्बल नैतिक सापेक्षता होने का भी तर्क देते हैं। उनका कहना है कि बहुसंख्यक भारतीय समाज में नैतिक ढांचे का स्पष्ट और निर्देशात्मक, कि क्या करें और क्या न करें, का अभाव इसे कमजोर बनाता है, और साथ ही नैतिक जिम्मेदारी से बचने के लिए बहानेबाजी की एक सुविधाजनक व्यवस्था भी उपलब्ध करा देता है। वास्तव में यहां का धर्म भिन्नताओं में एकता स्थापित करने वाला है। यहां माना गया कि एक परिस्थिति में जो सही है, वह दूसरी परिस्थिति में गलत हो सकता है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें नैतिकता के उद्देश्यों को नैतिक आचरण के विचलनों की कठोर और पूर्ण निंदा नहीं होती है। मदर अब इसका लाभ धर्म के स्वयंभू पालक उठाने लगे हैं। इसी लचीले धर्म से प्रेरित हम भारत के लोगों ने अपना गणतांत्रिक संविधान अंगीकार किया और देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर देने के इंतज़ाम किये। मगर समुदायों के कथावाचक तथा कर्मकांडी लोगों को जब धर्मगुरु के उच्च आसन पर कब्जा करने में तथा सियासत के कारोबार में भी अपना मुनाफा नज़र आने लगता है तब हमारा नया-नया लोकतंत्र कमजोर होने लगता है।

दुनिया भर के दार्शनिकों का तर्क है कि धर्म एक रक्षा तंत्र के रूप में काम करता है। यह हमारी पीड़ा को हरने के लिए एक मरहम जैसा है, और हमें गिरने से बचाने के लिए एक सहारा है। लेकिन 1980 के दशक में, बौद्ध शिक्षक जॉन वेलवुड ने एक नया 'आध्यात्मिक बाईपासिंग' शब्द गढ़ा और कहा कि यह कभी-कभी नुकसानदेह भी हो सकता है। वेलवुड के लिए, आध्यात्मिक बाईपासिंग, व्यक्तिगत, भावनात्मक अधूरे काम को दरकिनार करने, खुद की अस्थिर भावना को मजबूत करने, या बुनियादी जरूरतों, भावनाओं और विकासात्मक कार्यों को कम आंकने के लिए विचार और अभ्यास हो जाता है। दूसरे शब्दों में, यह तब होता है जब धार्मिक तथा आस्तिक लोग अपने वास्तविक लक्षणों को दरकिनार करते हुए अपने विश्वासों को थोपने लगते हैं। वे अपनी मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करने के बजाय उन्हें छिपाने लगते हैं। वेलवुड का तर्क है कि धर्म कोई इलाज या सरोगेट नहीं है – यह चिकित्सा और वास्तविक मदद का विकल्प नहीं है। हम भारत के लोगों ने अपने संविधान को यह विकल्प बनाया है। मगर प्रतिस्पर्धी राजनीति में धर्म का कारोबार जब सबको भाने लगा, तब भावनाओं को उभारने का आसान औजार सबको मिल गया। धर्म का उपयोग जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति को पहचानने तथा मानव मात्र में करुणामयी व्यवहार करने की प्रेरणा देने के बजाय विभेद का सिखाने में होने लगा। भावनाओं को भड़काने का खेल खतरनाक हद तक तीव्र हो सकता है इसे हमने बार-बार देखा है। राजस्थान सामान्य तौर पर अपने भाई-चारे और समरसता के सामाजिक ताने-बाने पर गर्व करता रहा है। अभिव्यक्ति और न्याय के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाने की आज़ादी इतनी निर्बाध नहीं हो सकती कि उसका उपयोग समाज में कटुता और वैमनस्य पैदा करने के लिए किया जाने लगे। इसलिए यदि कोई सस्ती लोकप्रियता या किसी अन्य एजेंडे के तहत प्रदेश में सांप्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ने का प्रयास करता है तो उसे रोकने का राज्य का दायित्व बनता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कार्य प्रणाली व निर्णय प्रक्रिया बताती है, सत्ता की आकांक्षी कांग्रेस गलतियों से कुछ सीखना चाहती नहीं

महावीर सिंह

गतांग से आगे जारी......

(16 दिसम्बर 2022 के राष्ट्रदूत में प्रकाशित लेख-

कांग्रेस की भारत जोडो यात्रा, आखिर है किस उद्देश्य को लेकर--के कुछ अंश----

कांग्रेस की भारत जोडो यात्रा, आखिर है किस उद्देश्य को लेकर? कुछ कांग्रेसी नेताओं का कहना है कि यात्रा चुनावों को ध्यान में रख कर नहीं निकाली जा रही है। यात्रा का प्रमुख उद्देश्य संविधान और संवैधानिक संस्थाओं की रक्षा करने लिए है।

आसमान छूती मंहगाई, बेरोजगारी, वैधानिक संस्थाओं, मीडिया के दुरुपयोग, महिलाओं, विकलांगों की समस्याओं को समझने, नफरत के माहौल और उससे होने वाले खतरों से जनता को वाकिफ कराना है।--- कांग्रेसियों का कहना है कि भाजपा-आरएसएस की नापाक जोडी देश की संस्थाओं को रौंद रही है। सामाजिक सौहार्द्र को तोड कर आतंक और नफरत का माहौल बना रही है। धर्म को राजनीतिक सत्ता हथियाने का औजार बना लिया। असहमति रखने वालों को निशाना बनाया जा रहा है।

---क्या संविधान खतरे में है??

अधिकतर आम लोग मानते है कि संविधान के बारे में ज्यादा तो नहीं जानते पर मोटा-मोटी संविधान से सरकार निकलती है। राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति संसद, विधान सभा, नगर पालिकाओं, पंचायतों आदि के चुनाव होते है और फिर सांसद, एमएलए, मंत्री प्रधान आदि बनते। यह सब तो अब भी हो रहा है। लोग जीताते है, लोग ही हराते है, कभी किसी एक को और कभी किसी ओर को। यह सब तो हो रहा है, इसके अलावा क्या खतरा है हमे नहीं पता।

-----यह जो कहा जा रहा है कि लोभ-लालच देकर, दल बदल करवाकर सरकार बनाली जाती है या चलती सरकारे गिरा दी जाती है??

इस पर सामान्य लोगों का उत्तर -
--जो लोग जीत के जाते है वे क्यों करते हैं ऐसा? जनता को पहले थोड़ा ही पत्ता होता है कि कौन कैसे फिसल जाएगा? पार्टियां ऐसे लोगों को टिकट ही क्यों देती है?

समाधान भी सिंपल है- संविधान संशोधन कर दे कि जीतने वाला, MLA, MP जिस पार्टी से या बिना पार्टी जीतता है उसे छोडता है तो सदस्यता समाप्त होगी।

-----बात को जारी रखते हुए-

क्या सुप्रीम कोर्ट को कोई खतरा? अधिकतर लोगों का मानना है सुप्रीम कोर्ट बारे में ज्यादा नही केवल इतना जानते है कि वहां तो बड़े-बड़े सेठों, नेताओं के मुक़दमे चलते है। बड़े-बड़े, मंहगे-मंहगे वकील उनके मुकद्दमे लड़ते है। कभी-कभी आम आदमी के हक के भी फैसले हो जाते है। सामान्यत: आम आदमी का तो कोई खास वास्ता नही पडता और कभी हो भी तो पहले तो वकीलों की भारी भरकम फीस नहीं, फिर बड़ों की लड़ाई सुलटाने के बाद कोर्ट को समय हो तो सुनवाई हो, वर्षों लग जाते है, पीढियां निकल जाती है। गरीबों की सुनवाई में कोई खास दिलचस्पी किसी की नही।

---एक पढे-लिखे नवयुवक की प्रतिक्रिया थी---

न्याय की बात तो राष्ट्रपति जी नें भी अभी-अभी बता दी, गरीब, मजदूर, छोटे-छोटे अपराधों के लिए वर्षों जेलों में बिताते हैं। 75 साल में कई निजाम आए-गए, इसमें यो कोई परिवर्तन हुआ नहीं। यदि इसे संविधान को खतरे वाली बात मानें है तो संविधान को खतरा है।

बात आगे बढाते हुए--

ओर यह सीबीआई, ईडी आदि से या इनको कोई खतरा? इनको क्या खतरा है, हर सरकार अपने आदमी बैठाती और चाहे वैसे कराती है। यह संस्थाएं, इनके कानून तो कांग्रेस के टाइम के हैं। तब से अब तक सरकारों कि कान पकडी छ्याली है,यह संस्थाएं है।

----- हां,

दिखता है कि सरकार अपने आदमियों के प्रति नरम है और विरोधयों के गोला-लाठी लगाने का कोई मौका चूकती नही। पर यह तो बड़े नेताओं की दिक्कतें है, आम आदमी को इस से क्या मतलब? जिन्होंनें बेहिसाब दौलत कमाई है वे डरें। वे पाला बदल लें, सब ठीक हो जाता है!!!

-----इन संस्थाओं में देश के बढ़िया से बढ़िया अधिकारी, जिनकी केवल एक विचारधारा हो कि संविधान, कानून सर्वोपरि ओर इन्हें पूर्णत: निष्पक्ष भाव से लागू कर सकें, वे नियुक्त हों किन्तु नियुक्त तो सरकारों के मर्जिदान होते हैं? क्या कोई भिन्न योजना है कांग्रेस के पास??

ओर बार-बार जो आरोप लगते हैं कि मीडिया जन महत्व के मुद्दों पर निष्पक्ष बहस न कर, विचारधारा विशेष का एजेंडा चलाता है, इस पर क्या कहना है? सब का एक ही उत्तर था कि मीडिया तो व्यापारिक दुकानें है। जो पैसे दे उसी का प्रचार--जिसकी खाए बजरी, उसकी करे चाकरी।

यह (मीडिया) स्वतंत्रतापूर्वक काम करें, इसके लिए इस यात्रा में तो कोई योजना सामने आई नहीं। महज आरोप है जिनसे जनता पहले से वाकिफ है।

कांग्रेस के नेता बार-बार आरोप लगाते है कि 2,4,5,10 बड़ें व्यापारिक-उद्योगिक घरानों को ध्यान में रख कर सारी सरकारी नीतियां बनाई जा रही है? इस पर ठेठ ग्रामीण परिवेश के आदमियों का कहना है कि सभी सरकार कमोबेश यही करती है। धन कुबेरों का तो राजे-रजवाड़ों-जागीरदारों के राज में भी महत्व था। धन कुबेरों का तो सारी ही सरकारें सर्वाधिक-सर्वोपरि ध्यान रखती है। कोई पहले की सरकारों के मर्जिदान थे कोई अब की सरकारों के। कोई पार्टी बिना इनके धन के चलती है क्या? इसी पैसे से नेता लोग फाइव स्टार जिंदगी जी कर गरीबों का भला करते है!

सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग--

सारी सरकारें करती है, कोई नई बात नहीं। इस भारत जोडो यात्रा में ही राजस्थान सरकार खुल कर सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग कर रही है। क्या इलाज है, यह प्रश्न था आम आदमी का?

ओर यह मंहगाई, बेरोजगारी तो सभी की परेशानी है?

हां, इनसे सब परेशान किन्तु भारत जोडो यात्रा से इनका क्या समाधान? कांग्रेस इन्हें खत्म करने की अपनी योजनाएं बताएं, तो बात बने।

---एक दूसरे बुजर्ग नें कहा।

इस यात्रा से सरकार के आगे ढोल बजा कर जगाने का प्रयास कर तो रहे ही हैं। पास खड़े नवयुवक नें कहा, हर दिन अखबारों, टीवी चैनल्स पर खबरें, लेख, बहस आती हैं इन मुद्दों पर। सरकार इन सब से अनजान तो है नही किन्तु उनके पास भी समाधान नही, सिवाय हकीकत छुपाने के।

और यह समाज बांटने, नफरत फैलाने वाली बात! निश्चितत: भारत में अधिसंख्य लोग सर्वधर्म-सर्वजातीय समभाव, सौहार्द्रपूर्ण सामजिक सद्व्यवहार- वसुदैवकुटुम्बकम में विश्वास करने वाले हैं।

हां कुछ बदजुबान, उच्छश्रंखल नेता, कार्यकर्ता करते हैं ऐसा, जो गलत है। इन्हें रोका जाना चाहिए। रामजादे-- ----, वन्देमातरम कहना----जाना होगा, ऐसी नफरती बातों से किसका भला--इनसे कोई रोजगार मिलेगा, मंहगाई भागेगी? ऐसी बातों से तो देश कमजोर ही होता है। तो क्या जय श्री राम के बजाए जय सियाराम बोलने से काम बन जाएगा? क्या फ्लाइंग किस देने से बात बन जाएगी? नहीं।

इनको नियंत्रित करना बहुत आसान है बशर्ते सरकार ऐसा करना चाहे। चाहे कोई हिन्दू हो, चाहे मुसलमान, जो भी धर्म, पंथ, जाती के आधार पर सामाजिक सद्भाव बिगाड़ें, उनके विरुद्ध तत्काल बिना भेदभाव कठोर कानूनी कार्यवाही करें, सब ठीक हो जाएगा।भारत जोडो यात्रा में यह मुद्दा उठाया जा रहा है, यह ठीक है। बिना हिचक यह गारंटी दें कि दंगाई, नफरत फैलाने वाले किसी धर्म, जाती, राजनीतिक दल के हों सबसे समभाव से कठोरता से निपटा जाएगा। ऐसा विश्वसनीय स्टैंड ले तो बात बने किन्तु कांग्रेस पर भी तुष्टिकरण के आरोप तो है ही।

कांग्रेस बताए धारा 370 पर, यूनिफॉर्म सिविल कोड पर, जातीय जनगणना, जनसंख्या नियंत्रण, लव जिहाद, धर्म के आधार पर भड़काने वालों पर, उनका क्या स्टैंड है?? गोल-गोल बातें करने से, अब, जनता भ्रमित नहीं हो सकती।

यदि भारत जोड़ो यात्रा को कांग्रेस के पुनरुथान के साथ जोडना है तो कांग्रेस इस यात्रा में विस्तार से बताए:–

किसानों के मुद्दों पर उसकी क्या योजना है, C2+50% के अनुसार एझ देगी या किन्तु परन्तु करेगी, मंहगाई व इन्फ्लेशन के साथ श्एझ को जोडेगी या नहीं, कृषि लागत की गणना के लिए नई-पारदर्शी व्यवस्था बनाएगी या नही, किसानों की आय बढ़ाने की क्या विश्वास करने योग्य योजनाए है? नीति आयोग के अध्ययन तो बताते है कि 2012 से 2018 के बीच किसानों की आय में 01% से भी कम वृद्धि हुई है। अधिकतर किसान बेहद गरीबी, अभावों में जीवन व्यतीत कर रहे है।

कांग्रेस इस यात्रा में स्पष्ट करे कि उद्योंगों-व्यवसायिक उपयोगों के लिए जबरन भूमि अधिग्रहण, अग्निवीर, ध्झ्ए, चुनाव सुधार जिसमें कम से कम यह गारंटी तो हो ही कि दल बदल करने वाले, हत्या, रेप के अपराधी, चुनाव नहीं लड़ पाएंगे, न्यायिक निर्णय में अपराधी घोषित-सजायाफ्ता व्यक्ति इन संस्थाओं का सदस्य न रहे। चुनावी बांड्स के बारे में और अन्य सम्बंधित बातों पर नीति स्पष्ट करें।

साबुन, तेल, बिस्किट्स, दवाइयां जैसी रोज मर्रा के अनेक उद्योगिक उत्पदों के मूल्य दिनोदिन बढ़ते जा रहे है। इनके मूल्यों को बांधना तो उचित व सम्भव नहीं किन्तु उनकी उत्पाद लागत निकालने और उन्हें सार्वजनिक की व्यवस्था तो की ही जा सकती है।

प्राइवेट सेक्टर में निचले स्तर की नौकरियों में आरक्षण, पुलिस सुधार जिस से पुलिस अपराधों के अन्वेषण में- गैर कानूनी सरकारी आदेशों- हस्तक्षेप को मानने से मुक्त हो, जनलोकपाल-भ्रष्टाचार, मीडिया स्वायत्तता, त्वरित न्याय व्यवस्था के लिए, कोस्मेटिक नहीं बल्कि मुलभुत सुधार, 60 साल से बड़े हर व्यक्ति के लिए सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, भरपूर भोजन की सुरक्षा, संसद-विधान सभाओं में महिला आरक्षण, सरकारी क्षेत्र की नौकरियों में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण, आदि विभिन्न ज्वलन्त मुद्दों पर अपनी नीति-कमिटमेंट बिना दांये-बाएं की बाते करे घोषित करे। फिर जनता विचार करे, विश्वास करे या न करे, यह जनता के विवेक पर छोडें।

कुल मिलाकर आम आदमी का मानना है राहुल व्यक्तिश: बहुत अच्छे इंसान है। वे अपने विचार जनता की भाषा में जनता को समझा नहीं पा रहे। कांग्रेस के कार्यकर्ता हर गांव, मोहल्ले, शहर में है। इस यात्रा से वे ऊर्जान्वित जरूर होंगे। राहुल की व्यक्तिगत छवि में भी निखार आएगा।

ग्रैंड ओल्ड पार्टी की गम्भीर बीमारियों से ग्रसित है और उसे दौडने योग्य बनाने के लिए कई सर्जरियों की आवश्यकता है।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

सनातन धर्म रक्षा संघ आया राष्ट्रीय हिंदू सेना के समर्थन में

अजमेर, (कासं)। राष्ट्रीय हिंदू सेना के अध्यक्ष विष्णु गुप्ता द्वारा ख्वाजा साहब की दरगाह में हिंदू मंदिर होने के दावे को ले कर किए गए वाद से ही दरगाह में मंदिर मामला विवाद बढ़ता ही जा रहा है। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के अध्यक्ष को मिल रही धमकियों के बाद अब सनातन धर्म रक्षा संघ भी समर्थन में आ गया है।

प्रेससवार्ता को संबोधित करते हुए सनातन धर्म रक्षा संघ के पदाधिकारी।

- **संघ से जुड़े पूर्व न्यायधीश शर्मा ने कहा कानून कर रहा अपना काम**
- **वोटों की खातिर राजनीतिक पार्टियां बना रही दूरियां**

सनातन धर्म रक्षा संघ के अध्यक्ष व पूर्व न्यायाधीश अजय शर्मा सहित अन्य पदाधिकारियों ने मंगल वार को प्रेसवार्ता आयोजित कर राष्ट्रीय हिंदू सेना के अध्यक्ष विष्णु गुप्ता को समर्थन देते हुए कहा कि दरगाह में शिव मंदिर है। इस मामले में न्यायालय ने विधि संवत सुनवाई कर संज्ञान लिया है। न्यायालय द्वारा संबंधित पक्षकारों को नोटिस भी जारी किए गए हैं लेकिन इसके बाद से ही वाद प्रस्तुत करने वाले विष्णु गुप्ता को लगातार धमकियां मिल रही है, जो विधि प्रक्रिया के विपरित है। उन्होंने कहा कि जिस किसी को भी आपत्ति है, उसके लिए अदालत के दरवाजे खुले हैं, वह अदलत में अपना पक्ष रख सकता है।

पूर्व न्यायधीश शर्मा ने तंज कसते हुए कहा कि इस प्रकरण में राजनीतिक पार्टियों ने राजनीतिक वोटों की खातिर दूरिया बना रही है, जिसके चलते सामने नहीं आ रही हैं। राष्ट्रीय स्तर के दल होने के नाते अपनी मजबूरियां होती हैं, संगठन में शीर्ष पर बैठे नेता दूरी बना लेते हैं, लेकिन उनका संघ गैर राजनीतिक है। सनातन धर्म की रक्षा के लिए वे सदैव तत्पर हैं।

वर्ग विशेष द्वारा माहौल बिगाडाने का प्रयास : संयोजक तरुण वर्मा ने कहा कि दरगाह मामले में न्यायालय में वाद दायर करने के बाद कुछ वर्ग समुदाय माहौल बिगाडाने का प्रयास कर रहे हैं। वर्मा ने कहा कि वीडियो वायरल कर खुली धमकियां दी जा रही है। सभी को संवैधनिक अधिकार है, हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता ने अपने तथ्यों के आधार पर न्यायालय में वाद दायर किया है। न्यायालय स्वविवेक से निर्णय लेगा, जिस को भी आपत्ति है व न्यायालय में जाकर पक्षकार बन अपना पक्ष रख सकता है। कई संगठन एवं नेता इस कार्यवाही को रूकवाने के लिए सरकार से भी हस्तक्षेप की मांग कर रहे हैं। कुछ लोग वाद प्रस्तुत करने वाले विष्णु गुप्ता को धमकियां देने से बाज नहीं आ रहे हैं। सनातन धर्म रक्षा संघ हिंदू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष गुप्ता की सुरक्षा की मांग करता है।

सोमनाथ एक्सप्रेस का इलेक्ट्रिक इंजन खराब

- **नागौर से पहले मारवाड़ छापरी में रुकी ट्रेन, एक घंटे देरी से पहुंची बीकानेर**

बीकानेर, गुजरात के गांधी नगर से जम्मू के जम्मूतवी तक जाने वाली ट्रेन का इंजन बीती रात नागौर के पास मारवाड़ छापरी में खराब हो गया। ऐसे में करीब डेढ़ घंटे तक ट्रेन इसी गांव के रेलवे स्टेशन पर खड़ी रही, बाद में वैकल्पिक व्यवस्था करके ट्रेन को आगे रवाना किया गया। इस ट्रेन में बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स थे, जो एग्जाम देने के लिए बीकानेर आ रहे थे।

ये ट्रेन अपने तय समय से करीब पंद्रह मिनट विलंब से जोधपुर से रवाना हुई थी। रास्ते में सही चल रही थी, इस बीच मेड़ता और नागौर के बीच स्थित स्टेशन मारवाड़ छापरी में अचानक ट्रेन रुक गई। शुरू में यात्रियों ने किसी ट्रेन को रास्ता देने की वजह से रुकने की सोची लेकिन करीब आधा घंटे तक ट्रेन नहीं चली तो बड़ी संख्या में लोग इंजन के पास ही पहुंच गए। जहां पता चला कि इलेक्ट्रिक इंजन में खराबी आ गई है। रेल कर्मियों ने काफी मशक्कत करके इंजन शुरू करने का प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली। ऐसे में ट्रेन के पीछे लगे दूसरे इंजन से इसे पीछे लिया गया। ट्रैक बदलकर वापस आगे रवाना किया गया। मेड़ता से पहुंचे रेलकर्मियों ने इसे करीब डेढ़ घंटे के विलंब के बाद रवाना तो कर दिया लेकिन बीकानेर पहुंचते-पहुंचते ये एक घंटा से ज्यादा विलंब से पहुंची। इसके बीकानेर पहुंचने का समय 12.50 है लेकिन रात दो बजे ये ट्रेन पहुंची। इस ट्रेन में बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स थे, जो एग्जाम देने के लिए मेड़ता और नागौर से बीकानेर आ रहे थे। स्टूडेंट्स को चिंता हो गई कि अगर आगे रवाना नहीं हुई तो सुबह एग्जाम से चूक जाएंगे।

राशिफल

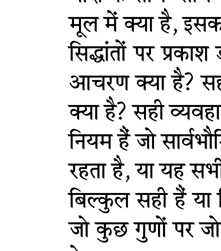

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 4 दिसम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र सायं 5:15 तक, गंड योग दिन 1:56 तक, गर करण दिन 1:11 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:20 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग दिन 1:11तक है। रवियोग सायं 5:15 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 1:00 से आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:41 तक, शुभ 10:54 से 12:17 तक, चर 2:53 से 4:11 तक, लाभ 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:05, सूर्यास्त 5:29

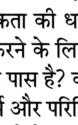

मेष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में है। अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार होगा।

कन्या

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

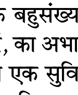

तुला

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

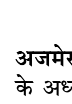

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे मतभेद समाप्त होंगे।

मकर

पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

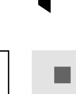

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।